International Journal of Education and Science Research Review

Volume-12, Issue-2 March-April-2025 E-ISSN 2348-6457

(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) P-ISSN 2349-1817

www.ijesrr.org Impact Factor - 7.02 Email- editor@ijesrr.org

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन

डा०रेनू कुमारी

असिस्टेंट प्रोफेसर

स्वामी विवेकानन्द कॉलिज ऑफ एजूकेशन

मतलबपुर, रूड़की (उत्तराखण्ड)

सारांश

विद्यालय वातावरण जितना अधिक प्रेरक और शिक्षा प्रधान होता है, उतनी ही तेजी से बालकों की समझने की शक्ति विकसित होती है तथा उनके समायोजन की क्षमता में भी वृद्धि होती है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। डॉ. ए.के.पी. सिन्हा तथा डॉ. आर.पी.सिंह द्वारा निर्मित स्कूली छात्रों के लिए समायोजन सूची को लिया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में उत्तराखण्ड के हरिद्वार जिले के माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर—सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत कुल 200 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श तकनीक द्वारा 100 विद्यार्थी सरकारी विद्यालय से तथा 100 विद्यार्थी गैर—सरकारी विद्यालय से लिए गये है। माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर—सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर होता है। माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर—सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण में सार्थक अंतर होता है। माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर—सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण एवं समायोजन में घनात्मक सह—सम्बन्ध पाया गया।

कुंजी शब्द—विद्यालय वातावरण एवं समायोजन

प्रस्तावना

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया और सर्वांगीण विकास का माध्यम है। शिक्षा एक निरंतर चलने वाली सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता है। यह केवल ज्ञान प्राप्त करने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसके माध्यम से व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक पहलुओं का भी विकास होता है। शिक्षा व्यक्ति को समाज में प्रभावी रूप से रहने और जीवन की विभिन्न परिस्थितियों के अनुरूप समायोजन करने में सहायता प्रदान करती है। यह व्यक्ति के व्यक्तित्व को निखारने, उसकी क्षमताओं को पहचानने और उसे आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

शिक्षा व्यक्ति के विकास के लिए एक अनुकूल वातावरण तैयार करती है, जो उसकी शारीरिक, मानसिक और नैतिक क्षमताओं के निरंतर विकास में सहायक सिद्ध होती है। जब व्यक्ति को अनुकूल वातावरण मिलता है, तो उसकी अधिगम क्षमता और जीवन के प्रति समझ विकसित होती है। औपचारिक शिक्षा के संदर्भ में बालक के समग्र विकास की जिम्मेदारी विद्यालय, वहाँ उपलब्ध संसाधनों और शैक्षिक वातावरण पर निर्भर करती है। विद्यालय ही वह स्थान है जहाँ बालक को व्यवस्थित रूप से शिक्षा प्राप्त करने, ज्ञान अर्जित करने और अपनी मानसिक क्षमताओं को विकसित करने के अवसर प्राप्त होते हैं।

बालक जन्म के समय कोरे कागज की तरह होता है, जिस पर उसके अनुभव, शिक्षा और समाज के प्रभाव धीरे—धीरे अंकित होते जाते हैं। प्रारंभिक अवस्था में बालक सरल विचारों को आत्मसात करता है और समय के

साथ अपने ज्ञान में वृद्धि करता जाता है। यह वृद्धि केवल जानकारी प्राप्त करने तक सीमित नहीं होती, बल्कि धीरे—धीरे वह अपने विचारों को जोडकर, उनका विश्लेषण करके और नए दृष्टिकोण अपनाकर बौद्धिक विकास करता है। इस प्रक्रिया में विद्यालय महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि यह बालक को केवल सूचनाएँ प्रदान करने का ही कार्य नहीं करता, बल्कि उसे तार्किक सोच, समस्या—समाधान की क्षमता और जीवन में अनुकूलन के कौशल भी प्रदान करता है।

विद्यालय केवल एक भौतिक संरचना नहीं है, बल्कि यह बालकों के बौद्धिक और नैतिक विकास का केंद्र होता है। यह एक ऐसा स्थान है, जहाँ विद्यार्थी अपने घर के वातावरण से अलग रहते हुए ज्ञान और सूचना का व्यवस्थित रूप से हस्तांतरण प्राप्त करते हैं। विद्यालय में विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों की समझ विकसित करने, उनकी तार्किक और आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करने तथा उन्हें समाज के साथ समायोजन करने के लिए आवश्यक कौशलों से परिचित कराया जाता है। शिक्षा केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह बालकों को सामाजिक जीवन के लिए तैयार करती है और उन्हें आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर करती है।

शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं होता, बल्कि यह विद्यार्थियों को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करने का कार्य भी करती है। विद्यालय में विद्यार्थियों को उनके बौद्धिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास के साथ—साथ व्यावहारिक जीवन में आवश्यक कौशलों में दक्ष बनाया जाता है। यह उन्हें अपने विचारों को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने, समाज के साथ सामंजस्य बैठाने और नैतिक मूल्यों को आत्मसात करने में सहायता प्रदान करती है।

शिक्षा व्यक्ति के जीवन का आधार होती है और इसका प्रभाव केवल व्यक्तिगत विकास तक ही सीमित नहीं रहता, बल्कि यह पूरे समाज को भी सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। यह व्यक्ति को उसकी क्षमताओं से परिचित कराकर उसे अपने जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है। विद्यालय और उसके वातावरण का बालकों के व्यक्तित्व निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान होता है। अतः शिक्षा को केवल औपचारिक ज्ञान के रूप में नहीं, बल्कि एक व्यापक सामाजिक प्रक्रिया के रूप में देखना चाहिए, जो व्यक्ति के समग्र विकास और समाज की उन्नति में सहायक होती है।

विद्यालय शिक्षा ग्रहण करने का प्रमुख स्रोत है, जहाँ विद्यार्थी समायोजन की प्रक्रिया को सीखता है। अच्छे समायोजन वाला व्यक्ति भविष्य में अधिक सफल होता है तथा उसमें स्वतंत्र विचारों और आत्मविश्वास की भावना विकसित होती है। विद्यालय में शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों ही क्रियाशील रहते हैं। आज के समय में बढ़ती जनसंख्या और जीवन की जटिलताओं के कारण विद्यालयों का महत्व और अधिक बढ़ गया है। विद्यालय को एक पवित्र हवनशाला कहा जा सकता है, जहाँ शिक्षकों के ज्ञान और अनुभव का हवन होता है और उसकी ज्वालाओं से सुयोग्य नागरिकों का निर्माण होता है। विद्यालय, विद्यार्थियों को जीवन का वास्तविक अनुभव प्रदान करते हुए उन्हें ज्ञान के उचित उपयोग, उनकी अंतर्निहित क्षमताओं के विकास, शैक्षिक ज्ञान की अभिवृद्धि तथा नैतिक एवं चारित्रिक उन्नति के लिए प्रेरित करता है। इसके साथ ही यह उनकी शैक्षिक उपलब्धियों को बढ़ाने और उचित समायोजन स्थापित करने में भी सहायता करता है। बालकों का व्यक्तित्व बाल्यावस्था से किशोरावस्था तक विकसित होता है और वे अपने अधिकांश समय विद्यालय में व्यतीत करते हैं। प्रत्येक बालक का

पालन—पोषण निश्चित वातावरण में होता है और यदि उपयुक्त वातावरण न मिले तो कई प्रतिभाएँ अविकसित रह जाती हैं। अतः बालक जिस प्रकार के भौतिक वातावरण में रहता है, उसी के अनुरूप उसकी जन्मजात शक्तियाँ विकसित होती हैं। विद्यालय में विभिन्न आदतों, रुचियों, योग्यताओं और दृष्टिकोणों वाले विद्यार्थी आते हैं और जैसे—जैसे उनका शारीरिक एवं मानसिक विकास होता है, वे बाहरी वातावरण के संपर्क में आते हैं, जिससे उनमें कई प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तन होते हैं। इन परिवर्तनों में विद्यालय वातावरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। समायोजन की प्रक्रिया जटिल होती है, जिसका विकास बालकों में धीरे—धीरे होता है। यदि कुछ विशेष बातों पर ध्यान दिया जाए तो बालकों में समायोजन की भावना को आसानी से विकसित किया जा सकता है। बालकों के समायोजन में सर्वप्रथम परिवार की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, इसके पश्चात् विद्यालय तथा वहाँ का वातावरण उनके कुशल समायोजन के लिए उत्तरदायी होता है। शिक्षक की भूमिका इसमें सर्वोपरि होती है, क्योंकि वह बालकों को अपने सहपाठियों के साथ मिल—जुलकर पढ़ने और आपसी सहयोग की भावना विकसित करने के लिए प्रेरित कर सकता है। शिक्षक विद्यालय के वातावरण का एक महत्वपूर्ण अंग होते हुए बालकों के समायोजन में अहम भूमिका निभाता है। विद्यालय का वातावरण जितना अधिक प्रेरक और शिक्षा प्रदान करने वाला होगा, बालकों में समायोजन की क्षमता भी उतनी ही तेजी से विकसित होगी। अतः विद्यालय वातावरण बालकों के शैक्षिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक समायोजन को गहराई से प्रभावित करता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की आवश्यकता

भारत का अतीत अत्यंत गौरवशाली रहा है। यह देश धन—धान्य से परिपूर्ण था और इसकी वीरता, पराक्रम तथा सांस्कृतिक समृद्धि अद्वितीय थी। भारत की अपार धन—संपदा का मूल कारण यहाँ के ज्ञान—विज्ञान की संपन्नता थी। यह देश प्राचीन काल से ही शिक्षा, दर्शन, चिकित्सा, गणित, खगोल विज्ञान और स्थापत्य कला में अग्रणी था। तक्षशिला और नालंदा जैसे विश्वविख्यात विश्वविद्यालयों ने शिक्षा के क्षेत्र में भारत को शीर्ष स्थान दिलाया था। भारत का वैभव उसकी सुदृढ़ और नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा पद्धति के कारण था, जिसने न केवल ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित की बल्कि समाज में नैतिकता, आध्यात्मिकता और सामाजिक समरसता की भावना भी विकसित की। शिक्षा केवल सूचनाओं का आदान—प्रदान नहीं थी, बल्कि यह जीवन के समग्र विकास का माध्यम थी।

आज के समय में शिक्षा को विकास से जोड़ा जा रहा है और यह माना जाता है कि वहीं राष्ट्र आर्थिक रूप से विकसित होता है जो शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी होता है। आधुनिक समाज में शिक्षा केवल एक व्यक्तिगत या सांस्कृतिक प्रक्रिया नहीं रह गई है, बल्कि यह एक आर्थिक और सामाजिक विकास का महत्वपूर्ण कारक बन गई है। जिन देशों ने शिक्षा को प्राथमिकता दी है, वे विज्ञान, प्रौद्योगिकी, नवाचार और आर्थिक समृद्धि में अग्रणी बने हैं। भारत भी शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन और नवाचार के माध्यम से आर्थिक और सामाजिक उन्नति की दिशा में प्रयासरत है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति— 2020 जैसे सुधारात्मक कदम इस बात का संकेत हैं कि शिक्षा को केवल औपचारिक ज्ञान तक सीमित न रखते हुए इसे व्यावहारिक और कौशल आधारित बनाया जा रहा है ताकि यह समाज और अर्थव्यवस्था की आवश्यकताओं के अनुरूप हो सके।

आज का मानव अनेक जटिल परिस्थितियों से घिरा हुआ है। उसकी आवश्यकताएँ इस भौतिक युग में असीमित होती जा रही हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास ने जीवन को सुविधाजनक बनाया है, लेकिन इसके साथ ही नई चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। मनुष्य अपने संसाधनों और उपलब्ध साधनों के द्वारा इन आवश्यकताओं की पूर्ति करने में लगा हुआ है, लेकिन यह एक जटिल प्रश्न बना हुआ है कि क्या आधुनिक मानव वास्तव में अपनी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकता है? जिस भौतिक सुख—सुविधा की प्राप्ति के लिए वह सतत् प्रयासरत है, क्या वह उसके मानसिक और आत्मिक संतोष के लिए पर्याप्त है? यह प्रश्न और अधिक जटिल हो जाता है जब हम समाज में बढ़ती हुई असमानता, आर्थिक विषमताएँ, मानसिक तनाव और नैतिक ह्रास को देखते हैं। समाज में व्याप्त अव्यवस्थाओं और निरंतर बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण व्यक्ति संतोष की अनुभूति नहीं कर पाता। उसकी आवश्यकताएँ जितनी अधिक बढ़ती हैं, उतनी ही अधिक जटिलताएँ उत्पन्न होती हैं, और वह एक अंतहीन दौड़ में उलझ जाता है।

फिर भी, व्यक्ति समय के अनुसार अपने विवेक और बुद्धि से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता रहता है और अपने वातावरण के अनुरूप समायोजन स्थापित करने का प्रयास करता है। यह समायोजन केवल भौतिक संसाधनों पर निर्भर नहीं होता, बल्कि यह मानसिक संतुलन, नैतिक मूल्यों और सामाजिक संरचना पर भी आधारित होता है। यदि मनुष्य केवल भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति को ही जीवन का लक्ष्य बनाए रखेगा, तो वह अपने अस्तित्व के वास्तविक उद्देश्य से भटक सकता है। अतः आवश्यक है कि शिक्षा केवल भौतिक उपलब्धियों तक सीमित न रहे, बल्कि यह आत्मज्ञान, नैतिकता और आध्यात्मिक समृद्धि का भी माध्यम बने। शिक्षा को इस प्रकार विकसित करना होगा कि यह न केवल आर्थिक विकास में सहायक हो, बल्कि यह व्यक्ति को मानसिक शांति, संतोष और सामाजिक समरसता की ओर भी अग्रसर करे। जब व्यक्ति अपने व्यक्तिगत, सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन में संतुलन स्थापित कर लेगा, तभी वह वास्तविक रूप से समायोजन कर पाएगा और एक संतुलित समाज का निर्माण संभव हो सकेगा।

आज की शताब्दी मानव विकास की दृष्टि से एक अनूठा स्थान रखती है। यह युग विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अभूतपूर्व विकास का युग है, जहाँ ज्ञान का विस्तार तीव्र गति से हो रहा है। ज्ञान—विज्ञान की इस क्रांति ने न केवल मानव जीवन को नई दिशा दी है, बल्कि उसके व्यवहार, कार्य प्रणाली, अभिरुचि, मानसिकता और जीवन के प्रति दृष्टिकोण में भी व्यापक परिवर्तन किया है। शिक्षा के क्षेत्र में भी यह परिवर्तन स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। आज शिक्षाशास्त्र केवल सूचनाओं के आदान—प्रदान तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास, उनकी रुचियों, कार्य—कुशलता, उपलब्धि स्तर और समायोजन क्षमता के वैज्ञानिक अध्ययन से भी जुड़ गया है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य केवल पाठ्यक्रमीय ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों को मानसिक, सामाजिक और व्यावहारिक रूप से सक्षम बनाना है, ताकि वे अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकें और समाज में अपनी उपयोगिता सिद्ध कर सकें।

आज के समय में विद्यार्थियों की उपलब्धि अर्जन क्षमता, सकारात्मक वातावरण और समायोजन स्थापित करने की प्रवृत्ति का प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण बन चुका है। वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक युग में केवल अकादमिक ज्ञान पर्याप्त नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर विशेष ध्यान देना आवश्यक हो गया है। यह सर्वांगीण विकास

Volume-12, Issue-2 March-April-2025 E-ISSN 2348-6457 P-ISSN 2349-1817

www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

तभी संभव हो सकता है जब विद्यालय का वातावरण सकारात्मक हो और विद्यार्थियों को सीखने तथा आत्म—विकास के लिए अनुकूल अवसर प्रदान करे। विद्यालय केवल एक शिक्षण संस्थान नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा मंच है जहाँ विद्यार्थियों के मानसिक, भावनात्मक, नैतिक और सामाजिक विकास की नींव रखी जाती है। यदि विद्यालय का वातावरण स्वस्थ, प्रेरणादायक और अनुशासित होगा, तो विद्यार्थी भी उसी अनुरूप अपनी मानसिकता विकसित करेंगे और समाज में समायोजन स्थापित करने की क्षमता अर्जित करेंगे। इसके विपरीत, यदि विद्यालय का वातावरण नकारात्मक होगा, तो विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, व्यवहारिक कुशलता और समायोजन प्रक्रिया को बाधित कर सकता है।

विद्यालय वातावरण का प्रभाव केवल शैक्षिक उपलब्धियों तक ही सीमित नहीं होता, बल्कि यह विद्यार्थियों के सामाजिक और भावनात्मक विकास को भी प्रभावित करता है। एक सकारात्मक विद्यालय वातावरण विद्यार्थियों को सहयोग, अनुशासन, नेतृत्व क्षमता, नैतिकता और आत्म—निर्भरता के गुणों से परिपूर्ण बनाता है। यह उन्हें तनाव प्रबंधन, निर्णय लेने की क्षमता और जीवन की जटिल परिस्थितियों के प्रति अनुकूलन विकसित करने में सहायता करता है। विशेष रूप से माध्यमिक स्तर पर, जब बालक किशोरावस्था में प्रवेश कर रहे होते हैं, उनके लिए एक प्रेरणादायक और नैतिक मूल्यों पर आधारित विद्यालय वातावरण अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है। इस स्तर पर विद्यार्थी बाहरी प्रभावों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होते हैं, और विद्यालय का वातावरण उनके व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि इस अवस्था में उन्हें सही मार्गदर्शन और उचित वातावरण प्राप्त नहीं होता, तो वे अवांछनीय प्रवृत्तियों की ओर आकर्षित हो सकते हैं, जिससे उनके शैक्षिक और व्यावहारिक जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए, शोधार्थी ने माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर—सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण के समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने को आधार बनाया है। सरकारी और गैर—सरकारी विद्यालयों के वातावरण में अंतर होता है, जिससे वहाँ अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन स्तर पर भी प्रभाव पड़ सकता है। सरकारी विद्यालयों में संसाधनों की उपलब्धता, शिक्षकों की संख्या, पाठ्यसहगामी गतिविधियों की स्थिति और अनुशासनात्मक ढाँचे में विभिन्न प्रकार की भिन्नताएँ देखने को मिलती हैं। वहीं, गैर—सरकारी विद्यालयों में आधुनिक संसाधनों की अधिक उपलब्धता, कठोर अनुशासन, प्रतियोगी माहौल और व्यक्तिगत मार्गदर्शन जैसी विशेषताएँ देखने को मिलती हैं। इन दोनों प्रकार के विद्यालयों के वातावरण का विद्यार्थियों के समायोजन पर क्या प्रभाव पड़ता है, यह अध्ययन का एक महत्वपूर्ण पहलू है।

इस शोध का उद्देश्य यह जानना है कि विद्यालय का वातावरण किस प्रकार से विद्यार्थियों के शैक्षिक, सामाजिक और भावनात्मक समायोजन को प्रभावित करता है। यह अध्ययन इस तथ्य को उजागर करने का प्रयास करेगा कि क्या सरकारी और गैर—सरकारी विद्यालयों के वातावरण में विद्यमान विभिन्नताओं का विद्यार्थियों के विकास और समायोजन प्रक्रिया पर कोई विशेष प्रभाव पडता है। इस शोध से प्राप्त निष्कर्ष भविष्य में विद्यालयों की नीतियों, शिक्षण पद्धतियों और विद्यार्थियों के लिए सकारात्मक वातावरण निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। यदि विद्यालयों में समायोजन को प्रोत्साहित करने वाले तत्वों की पहचान कर उन्हें सुदृढ़ किया जाए, तो यह शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावी और विद्यार्थी—केंद्रित बना सकता है।

संबंधित साहित्य की समीक्षा

संबंधित साहित्य की समीक्षा किसी भी शोध या अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण और अनिवार्य हिस्सा होती है। इसका मुख्य उद्देश्य अतीत में किए गए शोधों और अध्ययनों के संचित ज्ञान का विस्तृत विश्लेषण करना होता है। यह प्रक्रिया शोधार्थी को उस विषय से जुड़े पूर्व के निष्कर्षों, सिद्धांतों और तथ्यों को समझने में मदद करती है। साथ ही, यह शोधार्थी को अनावश्यक दोहराव और संसाधनों की बर्बादी से बचाती है। संबंधित साहित्य की समीक्षा के माध्यम से शोधार्थी यह जान पाता है कि उससे पहले उस विषय पर क्या कार्य हुआ है, किन पहलुओं पर शोध किया गया है, और किन क्षेत्रों में अभी और अध्ययन की आवश्यकता है।

प्रस्तुत अध्ययन में, विद्यालय वातावरण एवं समायोजन संबंधित पूर्व में किए गए शोधों और अध्ययनों की समीक्षा की गई है। इन शोधों में विद्यालय वातावरण एवं समायोजन पर आधारित असमानताओं, सामाजिक मानदंडों, शैक्षिक और आर्थिक अवसरों में अंतर तथा भूमिकाओं से जुड़े मुद्दों को विस्तार से समझने का प्रयास किया गया है। इन अध्ययनों के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार विद्यालय वातावरण एवं समायोजन समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करता है और इसके क्या सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक परिणाम हो सकते हैं।

इस अध्ययन में, विद्यालय वातावरण एवं समायोजन से संबंधित पूर्व शोधों की समीक्षा करके यह समझने का प्रयास किया गया है कि इस विषय पर क्या कार्य हुआ है और भविष्य में किन पहलुओं पर और अधिक शोध की आवश्यकता है। इससे शोधकर्ता को एक स्पष्ट दिशा मिलती है और वह अपने शोध को और अधिक प्रभावी ढंग से आगे बढ़ा सकता है।

सिंह, अमित कुमार (2021) ने **'इण्टरमीडिएट स्तर पर अध्ययनरत् छात्र—छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा पर उनके विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का अध्ययन'** विषय पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। विकासोन्मुख प्रक्रिया से प्रभावित होते हुए भी हमारे राष्ट्र में व्यावसायिक पिछड़ापन है। विश्वस्तरीय प्रतियोगिता के युग में यह आवश्यक हो गया है कि विद्यार्थी विद्यालय स्तर से ही अपनी योग्यता व क्षमता के अनुरूप प्रयास करे। व्यवसाय योजना की प्रक्रिया को विद्यालयी जीवन से ही प्रारम्भ कर देना चाहिए और इसी के अनुरूप प्रयास किये जाने चाहिए। इससे प्रतियोगिता के लिए आत्मविश्वास उत्पन्न करने में सहायता मिल सकेगी। अन्यथा इस प्रतियोगिता के युग में वे अधिक समय तक टिक नहीं पायेंगे और दिग्भ्रमित होकर अनेक मनोवैज्ञानिक समस्याओं के शिकार हो सकते हैं। इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी ने यह जानने की आवश्यकता अनुभव की है कि क्या व्यावसायिक आकांक्षा और विद्यालयी वातावरण में कोई सम्बन्ध है अथवा नहीं।

सिंह, निर्भय (2018) ने **'विद्यार्थियों के उपलब्धि स्तर में विद्यालयीय वातावरण के प्रभाव का एक अध्ययन'** विषय पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। प्रस्तुत शोध पत्र के निम्नलिखित उद्देश्य है। स्वायत्त एवं परिचित वातावरण वाले विद्यालयों के छात्रों की उपलब्धि की तुलना करना। स्वायत्त एवं नियंत्रित वातावरण वाले विद्यालयों के छात्रों की उपलब्धि की तुलना करना। परिचित एवं नियंत्रित वातावरण वाले विद्यालयों के छात्रों की उपलब्धि की तुलना करना। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत

शोध अध्ययन में आगरा जनपद के समस्त माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कुल छात्रों में से 120 छात्रों का चयन सरल यादृच्छिक विधि के द्वारा किया गया है। प्रस्तुत शोध में आंकड़ों का वर्गीकरण करने के लिए डॉ० मोती लाल शर्मा द्वारा निर्मित विद्यालयी वातावरण प्रश्नावली का प्रयोग किया गया ह। विद्यालय वातावरण के आधार पर छात्रों की उपलब्धि का निष्कर्ष निम्न रूप में है— 1. स्वायत्त वातावरण वाले तथा परिचित वातावरण वाले छात्रों की उपलब्धियाँ की तुलना की गयी है। दोनों प्रकार के वातावरण वाले विद्यार्थियों में छात्रों की उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं आया है इसलिये दोनो प्रकार के वातावरण वाले छात्रों की उपलब्धियाँ एक समान है। 2. स्वायत्त वातावरण वाले तथा नियंत्रित वातावरण वाले छात्रों की उपलब्धि की तुलना की गयी है। दोनों प्रकार के वातावरण वाले विद्यालयों में छात्रों की उपलब्धि में सार्थक अन्तर आया है इसलिये दोनों के प्रकार के वातावरण वाले छात्रों की उपलब्धियाँ समान नहीं है। 3. परिचित वातावरण वाले तथा नियंत्रित वातावरण छात्रों की उपलब्धि की तुलना की गयी है। दोनों प्रकार के वातावरण वाले विद्यालयों में छात्रों की उपलब्धि में सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ है इसलिये दोनों प्रकार के वातावरण वाले छात्रों की उपलब्धियाँ एक समान है।

सिंह, बलवान (2018) ने **'माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन'** शीर्षक पर अपना अध्ययन कार्य संपन्न किया। इसके लिए सरकारी व गैर सरकारी माध्यमिकविद्यालयों से 40 विद्यार्थियों का चयन किया गया। आंकड़े एकत्रित करने के लिए डा० ए.के.पी. सिन्हा व आर.पी. सिंह द्वारा निर्मित विद्यालयी छात्रों की समायोजन अनुसूची का प्रयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष में सरकारी व गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण में सार्थक अंतर पाया गया। अर्थात गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों का विद्यालय वातावरण सरकारी विद्यालयों की अपेक्षा उच्च पाया गया। सरकारी व गैर सरकारी के विद्यालयों के विद्यार्थियों के योजन में सार्थक अन्तर पाया गया अर्थात गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक समायोजित पाए गए। सरकारी व गैर सरकारी माध्यमिक स्तर के विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन व विद्यालयी वातावरण में धनात्मक सह—सम्बन्ध पाया गया। अर्थात् विद्यालय का वातावरण अच्छा होने पर छात्रों की समायोजन क्षमता भी अच्छी होती है। तथा विद्यालय का वातावरण निम्न कोटि का होने पर समायोजन की क्षमता भी निम्न कोटि की होती है।

परमार, विशाल (2014) ने **'अहमदाबाद में स्कूल स्तर के विद्यार्थियों छात्र और छात्राओं का समायोजन'** शीर्षक पर अपना शोध कार्य किया। इसके लिए गुजरात राज्य के 120 छात्रों का चयन किया। जिनमें 60 छात्र व 60 छात्राओं को लिया गया। शोध आंकड़े एकत्रित करने के लिए आर. एस. पटेल द्वारा निर्मित एडजस्टमेंट इन्वेंटरी (1998) का प्रयोग किया गया। शोध के निष्कर्ष बताते हैं कि विद्यालय में पढ़ने वाले छात्र और छात्राओं के समग्र समायोजन, सामाजिक समायोजन और भावात्मक समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया। छात्राओं का समग्र समायोजन, सामाजिक और भावात्मक समायोजन छात्रों की अपेक्षा उच्च पाया गया गया। छात्र व छात्राओं के गृह समायोजन में भी सार्थक अंतर पाया गया। छात्रों का ग्रह समायोजन छात्राओं की अपेक्षा उच्च पाया गया। छात्रों व छात्राओं के स्कूल समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

प्रमाणिक जॉयमाल्या एवं अन्य (2014) ने **'माध्यमिक स्कूल के विद्यार्थियों के समायोजन का उनके जेंडर व निवास के आधार पर अध्ययन'** किया। अध्ययन के लिए वेस्ट बंगाल के पुरुलिया जिले के 8 माध्यमिक विद्यालयों (4 ग्रामीण व 4 शहरी) से 471 विद्यार्थियों का चयन किया। आंकड़ों को एकत्रित करने के लिए इन्होंने साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया। शोध निष्कर्ष के आधार पर बनाया गया कि पारिवारिक समायोजन, स्कूल समायोजन, सहकर्मी समायोजन एवं समग्र समायोजन मे शहरी और ग्रामीण छात्रों के बीच समायोजन क्षमता में कोई महत्वपूर्ण नहीं है परंतु छात्र—छात्राओं के पारिवारिक समायोजन, स्कूल समायोजन, सहकर्मी समायोजन एवं समग्र समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर पाया गया। अध्ययन के परिणाम यह भी दर्शाते हैं कि परिवार समायोजन, स्कूल समायोजन और समग्र समायोजन मे लिंग और निवास के आधार पर महत्वपूर्ण संबंध पाया गया जबकि सहकर्मी समायोजन के संबंध में लिंग और निवास के आधार पर कोई सार्थक संबंध नहीं पाया गया।

शोध समस्या कथन

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का
समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन

शोध में प्रयुक्त शब्दों की परिचालनात्मक परिभाषाएँ—

विद्यालय वातावरण

विद्यालय वातवारण वह तत्व है जो बालकों में सिखने की प्रक्रिया वर्ग या कक्षा के भौतिक वातावरण को प्रभावित करता है। इसके अन्तर्गत वे सभी व्यवस्थायें आती है, जो छात्र के मानसिक विकास में अहम है। जैसे विद्यालय भवन, रोशनी की व्यवस्था, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, फर्नीचर एवं खेल—मैदान आदि। विद्यालय में छात्रों, शिक्षकों और अन्य कर्मचारियों के बीच संबंध, मानदंडों, मूल्यों और शैक्षिक संस्थान के संरचनात्मक, व्यक्तिगत और कार्यात्मक कारकों का मिश्रण जो विद्यालय को विशिष्टता प्रदान करता है।

समायोजन

लक्ष्य प्राप्ति के लिए व्यक्ति द्वारा अनुकूल व प्रतिकूल परिस्थिति में वातावरण के साथ सांमजस्य पूर्ण व्यवहार समायोजन कहलाता है। यहां समायोजन से तात्पर्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक, सामाजिक एवं सवेगात्मक समायोजन से है। समायोजन वह पथ है, जिस पर चलते हुए हम ऐसे वातावरण में जो कभी सहायक है, तो कभी जटिल है और कभी हानिकारक है, अपनी आवश्यकताओं की तुष्टि करते हैं। हमारे समायोजित होने की प्रक्रिया केवल तभी घटित होती है, जब हमारी कुछ आवश्यकताएँ हो, जब हम उन आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अनेक मार्ग चुनते हैं और जब पर्यावरण, जिसमें कि हमें संतुष्टियाँ ढूँढनी है, हमारे प्रति तटस्थ या विरोधी बना रहे।

माध्यमिक विद्यालय

ऐसे विद्यालय जिनमें कक्षा 9 व 10 तक के विद्यार्थियों को शिक्षण करवाया जाता है, माध्यमिक स्तर के विद्यालय कहलाते है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य

1- माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यार्थियों के विद्यालयों के वातावरण का अध्ययन करना।

2- माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।

3- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण एवं समायोजन के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनायें

1- माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर—सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण में सार्थक भिन्नता नहीं है।

2- माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर—सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक भिन्नता नहीं है।

3- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण एवं समायोजन के मध्य सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

प्रस्तुत शोध का न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में उत्तराखण्ड के हरिद्वार जिले के माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर—सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत कुल 200 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श तकनीक द्वारा किया गया है। इनमें 100 विद्यार्थी सरकारी विद्यालय से तथा 100 विद्यार्थी गैर—सरकारी विद्यालय से लिए गये है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में डॉ. ए.के.पी. सिन्हा तथा डॉ. आर.पी.सिंह द्वारा निर्मित स्कूली छात्रों के लिए समायोजन सूची को लिया गया है। तथा विद्यालय वातावरण के अध्ययन हेतु डॉ. करूणा शंकर मिश्र द्वारा निर्मित विद्यालय वातावरण परिसूची का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध अध्ययन के अन्तर्गत निर्धारित उद्देश्यों के संदर्भ में मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात एवं सह—सम्बन्ध का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना—1

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर—सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण में सार्थक भिन्नता नहीं है।

तालिका—1

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर—सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का मध्यमान, मानक विचलन और टी—मूल्य

विद्यालय के प्रकार	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	टी—मूल्य	सार्थकता स्तर
सरकारी विद्यालय	100	118.29	2.89	9.012	0.05

गैर—सरकारी विद्यालय	100	121.63	2.32		

तालिका संख्या 1 में माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण से सम्बन्धित आंकडों का मध्यमान क्रमशः 118.29 व 121.63 तथा मानक विचलन क्रमशः 2.89 व 2.32 प्राप्त हुआ है। प्राप्तांको की गणना के आधार पर क्रान्तिक अनुपात का मान 9.012 प्राप्त हुआ है। जो स्वतंत्रता के अंश 398 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर सारणी में दिये गये मान 1.96 से अधिक है। अतः इससे स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर—सरकारी विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण में सार्थक अन्तर है। अतः पूर्व निर्मित परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना—2

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर—सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक भिन्नता नहीं है।

तालिका—2

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर—सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन का मध्यमान, मानक विचलन और टी—मूल्य

विद्यालय के प्रकार	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	टी—मूल्य	सार्थकता स्तर
सरकारी विद्यालय	100	97.53	3.20	3.699	0.05
गैर—सरकारी विद्यालय	100	99.15	2.99		

तालिका संख्या 2 में माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन से सम्बन्धित आंकडों का मध्यमान क्रमशः 97.53 एवं 99.15 तथा मानक विचलन क्रमशः 3.20 एवं 2.99 प्राप्त हुआ है। प्राप्तांकों के आधार पर गणना द्वारा क्रान्तिक अनुपात मान 3.699 प्राप्त हुआ है। जो स्वतंत्रता के अंश 398 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर सारणी में दिये गये मान 1.96 से अधिक है। अतः इससे स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों में सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना—3

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण एवं समायोजन के मध्य सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

तालिका—3

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध गुणांक

समूह	चर	सह—सम्बन्ध गुणांक का मान
माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी	विद्यालय वातावरण	+ 0.29
	समायोजन	

सारणी संख्या 3 में माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर—सरकारी विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण एवं समायोजन के मध्य सम्बन्ध को दर्शाया गया है। प्राप्त आंकड़ों की गणना से सम्बन्ध का मान + 0.29 प्राप्त हुआ है। जो

स्वतंत्रता के अंश 398 पर सारणी मूल्य 0.098 से अधिक है। अत: दोनों चरों में सार्थक धनात्मक सह—सम्बन्ध है। अत: परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष

- माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर—सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण में सार्थक अंतर होता है। अर्थात् सरकारी विद्यालयों की अपेक्षा गैर—सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का विद्यालय वातावरण उच्च पाया गया है।
- माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर—सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर होता है। अर्थात् सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की अपेक्षा गैर—सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी अधिक समायोजित पाये गये।
- माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर—सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण एवं समायोजन में घनात्मक सह—सम्बन्ध पाया गया। अर्थात् विद्यालय वातावरण उच्च कोटि का होने पर विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता भी उच्च होती है तथा विद्यालय वातावरण निम्न कोटि का होने पर समायोजन की क्षमता भी निम्न कोटि की होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- सिंह, अमित कुमार (2021) 'इण्टरमीडिएट स्तर पर अध्ययनरत् छात्र—छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा पर उनके विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का अध्ययन' जरनल ऑफ इमरजिंग टैक्नोलॉजीज एण्ड इनोवेटिव रिसर्च, ई—आई.एस.एस.एन. 2349-5162, वॉल्यूम—6, इश्यू—5
- सिंह, निर्भय (2018) 'विद्यार्थियों के उपलब्धि स्तर में विद्यालयीय वातावरण के प्रभाव का एक अध्ययन' रिसर्च गुरू, ऑनलाइन जरनल ऑफ मल्टीडिसीप्लीनरी सब्जेक्ट्स, ई—आई.एस.एस.एन. 2349-266x, वॉल्यूम—12, इश्यू—2
- सिंह, बलवान (2018) 'माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन' इण्टरनेशनल एजूकेशन एण्ड रिसर्च जनरल, ई—आई.एस.एस.एन. 2454-9916, वॉल्यूम—4, इश्यू—9
- परमार, विशाल (2014) 'अहमदाबाद में स्कूल स्तर के विद्यार्थियों छात्र और छात्राओं का समायोजन' नेशनल जनरल ऑफ इण्डियन साइकोलॉजी, ई—आई.एस.एस.एन.2248-5396, वॉल्यूम—2, इश्यू—1
- प्रमाणिक जॉयमाल्या एवं अन्य (2014) 'माध्यमिक स्कूल के विद्यार्थियों के समायोजन का उनके जेंडर व निवास के आधार पर अध्ययन' अमेरिकन जनरल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च साइंस, आई.एस.एस.एन. 2327-6126, वॉल्यूम—2, इश्यू—12
- राय, पारसनाथ (2012) 'अनुसंधान परिचय' लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
- सिंह, अरूण कुमार (2013) 'मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ' मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

- गैरेट, हेनरी ई. (2014) 'शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग' कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली।